दिल्ली सल्तनत का विघटन - इसके कारण
(दूसरा दिन)

तुर्क सुल्तानों ने इन विघटनकारी तत्वों को प्रतिबन्धित करने के लिये कई तरीके अपनाये, जैसे दासों का शक्तिशाली दल का गठन करना या एक ऐसे अमीर वर्ग की संरचना करना जो पूर्ण रूप से सुल्तान पर आश्रित हो। यह कार्य इक्ता प्रणाली के आधार पर किया गया। किन्तु सुल्तानों को शीघ्र ही यह आभास हो गया कि इस सीमित समूह के बीच भी शक्तिशाली और महत्वकांक्षी अमीरों पर नियंत्रण रखना कठिन है जिनमें से कई अपनी अलग-स्वतंत्र सत्ता कायम करने की फिराक में रहते थे।

P. T. O. →

Scanned with CamScanner

Deg-2
11481(H)

इस प्रकार बंगाल, सिंध, गुजरात, दौलताबाद आदि जैसे दूरवर्ती स्थानों के हाकिमों पर नियंत्रण रखना सैदैव कठिन लगता था। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि काफी हद तक आनुवंशिकता के सिद्धांत पर आधारित एक छोटा अमीर-वर्ग बनाने का फिरोज का प्रयास भी विफल हो गया।

इस स्थिति में धर्म शायद ही कोई सहायता कर सकता था क्योंकि सल्तनत का अस्तित्व सुदृढ़ होने के बाद मुख्य संघर्ष हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच नहीं, बल्कि मुसलमानों और मुसलमानों के बीच था। फिर भी धर्म के नारे का प्रयोग हिन्दू राज्यों और किसानों को लूटने के कृत्यों को उचित ठहराने के लिए किया जाता रहा।

सेना में भर्ती को लेकर भी समस्या पैदा हुई। दिल्ली के सुल्तानों का पश्चिम और मध्य एशिया से संबंध टूट जाने के बाद वे इस स्रोत से तुर्की एवं अन्य सैनिकों को अपनी सेना में भर्ती करने की आशा नहीं कर सकते थे। अतः उन्हें (क) अफगानों पर - जिनमें से अनेक भारत में बस चुके थे। (ख) मुख्यतः भारत पर कब्जा करने के समय आए तुर्की सैनिकों के वंशजों पर (ग) मंगोलों और मुस्लिम धर्मान्तरितों पर (घ) एक नया कौशित योद्धा समुदाय के हिन्दुओं पर भरोसा करना पड़ा। फिरोज ने तुर्कों और मंगोलों के वंशजों को आनुवंशिक स्वत्व प्रदान

PTO

कर उन्हें वरीयता देने की कोशिश की। उसने अपने दासों के स्थान पे धर्मांतरित मुसलमानों की भी भर्ती किया। किन्तु कोई भी प्रयास सफल नहीं हुआ।

सुल्तानों के सामने एक अन्य समस्या उत्तराधिकार के संबंध में भी थी। अमीर वर्ग किसी सफल सुल्तान की संतानों में से ही किसी को उसका उत्तराधिकारी मानने के लिए तैयार होने की स्थिति में होते भी थे तो ऐसा कोई नियम नहीं था जिसके आधार पर ज्येष्ठ पुत्र को ही राजगद्दी प्राप्त हो। इसलिए उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो जाता था जिसमें महत्वाकांक्षी अमीर अपने ही हित साधने का अवसर तलाशते थे।

समाप्त